भरथरीचरीत्र

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

||श्रीः ||

भरथरी-चरित्र

महानुभाव भूपालवर्गचूडामणि राजा भरथरीजी के
सकल राजपाट छोड स्वजनों से मुँह मोड
निर्जन वन में जाकर योग साधने की
मधुर वार्ता गायन में ।

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

संस्करण : जुन २०१४, संवत् २०७१

मूल्य : १५ रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

भरथरी चरित्र–प्रारम्भ

दोहा - इन्दर के नाती भये, पुत्र गन्धरवसेन।
भाई विक्रमाजीत के, मैनावंती भेन॥

जा दिन जन्मे हैं राजा भरथरी, बाजैं तबला निशान॥
हरे हरे गोबर मँगाय कै, अँगना बेदी लिपाय ॥
मोतियन चौक पुराय कै, कञ्चन कलश धराय॥
सुघर सहेली बुलाय के, गावैं मंगलाचार॥
काशी से पण्डित बुलावती, चन्दन चौकी बिछाय॥
ब्रह्मा बाँचत वेद को, मुल्ला हरफ किताब॥
नाम तो मिला है भरथरी, कर्म लिखा बाला जोग॥
बारों जारों बोरों वेद को, पुत्रै दोष लगाय॥
कञ्चन होगी दक्षिणा, लौटि धरो इसका नाम॥
उलटी पुलटी ब्रह्मा देखता, क्या जु रची करतार॥
लिखनेवाला सोइ लिख गया, को है मेटनहार॥

कागद होय रानी बांचिये, करम न बाँचा जाय॥
ब्रह्मा ये क्या करि दिया, बालक बुद्धि सिवाय॥
एक वरष के भरथरी, दूजो तीजो जो लाग॥
चार वरष के भरथरी, माता तजे हैं परान॥
पांच वरष के भरथरी, कपड़े पहिरे शृङ्गार॥
छठे वरष के भरथरी, वेद पढ़न को जाय॥
सात वरष के भरथरी, पढ़ि उतरे चटसार॥
नवें वरष के भरथरी, ब्याही अनूपदेशी नार॥
ग्यारह वरष के भरथरी, ब्याही पिङ्गलदेशी नारि॥
बारह वरष के भरथरी, ब्याही श्यामदेशी नारि॥
तेरह वरष के भरथरी, बांधी तीर कमान॥
एक दिन आये बोली रानी श्याम दे, सुन राजा महाराज॥
कभी न आये रंगमहल में, न खेले कभी शिकार॥
इतनी सुन राजा भरथरी, बोले सुनहु खवास॥
जलदी से घोड़ा शृंगारि कै, लावो नौटंकी कमान॥
कपडे मँगाये भण्डार से, पहिरे राजकुमार॥

पांचों पहरे राजा कापड़े, पांचों बांधे हथियार॥
चुनि चुनि बांधे राजा पागड़ी, बावन खिरकी रखाय॥
खिरकी खिरकी राजा पग धरे, दिवले दिये हैं जलाय॥
ऐसे राजा हैं भरथरी, मानो इन्द्र अखाड़े को जायँ॥
कुल में अमर राजा भरथरी जी॥
चढ़ि घोडा ललकारते, बारे दूनि उजार॥
बारे से दूनी उजाड़ में, घेरी मृगोंदी डार॥
बोली मृगी सिंहलद्वीप की, सुनो राजा महाराज॥
जो तुम भूँखे शिकार के, मारो मृगी दो चार॥
कालामृग मति मारियो, त्रिया हो जायँगी रांड॥
बोले ते दिन राजा भरथरी, सुन मृगी मेरी बात॥
नाती हैं राजा इन्द्र के, पिता गन्धरवसेन॥
भाई विक्रमाजीत के, मैनावंती के वीर॥
हम तो बेटे रजपूत के, त्रियापर गेरें न हाथ॥
मारैं तेरे काले मृग को, भक्षण करैंगे बनाय॥
काहे को कलपै त्रिया बावली जी॥

बोली मृगी सिंहलद्वीप की, सुनो मृगा मेरी बात॥
भागा जाय तो कंथा भागियो, सिरपर नाचा है काल॥
भागे से मृगी ना बचैं, जो कुछ लिखा करतार॥
जो रे हुकुम भगवान् का, हम पर गेरैंगे हाथ॥
नहीं हुकुम भगवान् का, लौटि महल को जाँय॥
बीण बजाई राजा भरथरी, मृगा लीनो है मोहि॥
फुदकि फुदकि मृगा नाचता, राजा खेलैं शिकार॥
पहली गांसी राजा फेंकता, मृगा गये हैं बचाय॥
दूजी गांसी राजा फेंकता, ले गया सींगों की आड़॥
तीजी गांसी राजा फेंकता, झेला सरे मुखवार॥
धम्मदेसी मृगा गिर गया, पड़ेही करतारे जवाब॥
खुरी देना मेरी माय को, धर लेगी पुजाय॥
नैना देना चतुर नारि को, जग को देखेगी सिहाय॥
सींगातो देना काहू क्षत्री को, मांझ लेगा नबाय॥
मृगछाला देना काहू तपसी को, बन में लेगा बिछाय॥
कुल में अमर राजा भरथरी जी॥ ॥दोहा॥

राजा पातखडत हम, चले रहैं सिंहलद्वीप॥
एक बाण कै कारने, शीश कीन बकशीश॥
आछी लागी पारथी, गहरा लागा घाव॥
तब तक जीव कण्ठ में, जब तक बीण बजाव॥
हंस उड़ा है वैकुण्ठ को, काया गइ कुम्हलाय॥
बोले मृगी सिंहलद्वीप की, सुनो राजा महाराज॥
जैसे कलपत देखो हम फिरैं, ऐसे कल्पै तेरी नारि॥
तीन दिना तेरे राज के, पीछे साधोगे योग॥
मारि मृगा राजा ले चले, आये जङ्गल के बीच॥
सिद्ध मिले गोरखनाथजी, पहुँचे योगी के पास॥
चरण छुये बाबा नाथ के, गोरख करते जवाब॥
मेरे चरण बच्चा ना छुवे, तुझको लगा है शाप॥
यो है उजार को तापसी, नाहक डारो तैं मारि॥
एक मृग को मारि के, सत्तर करी हैं रांड॥
बुरा किया राजा भरथरी जी॥
बोले राजा ते दिन भरथरी, सुनो बाबा गोरखनाथ॥

जो अजमति के फकीर हौ, मृगा देना जिलाय॥
याद किया भगवान् को, राखो भेष की लाज॥
मारी है चुटकी विभूति की, मिरगा उठि भयो ठाढ़॥
फुदकि फुदकि मृगा नाचता, पहुँचा मृगी के पास॥
बोली मृगी सिंहलद्वीप की, सुनो बाबा गोरखनाथ॥
जुग जुग जीवे बाबा गोरखजी, फिर के फेरा सुहाग॥
कुल में अमर राजा भरथरी जी॥
ज्ञान गुरु का लग गया, हिरदे गया है समाय॥
बोले राजा ते दिन भरथरी, सुनो गुरु गोरखनाथ॥
चेला बनाले बाबा आपना, सेवा करेंगे बनाय॥
बोले बाबा गोरखनाथजी, सुन बच्चा मेरी बात॥
तुमको चेला बच्चा ना करौं, तुम हौ राजकुमार॥
तुम्हरे महल में रानियाँ, हम पर पड़ेगा शाप॥
पान फूल के भोगिया, ना सधे तुमसे जोग॥
बोले राजा ते दिन भरथरी, सुनो बाबा मेरी बात॥
हमको चेला बाबा बेग करो, नहिं तुम को देहिंगे शाप॥

मन में शोचै बाबा गोरखनाथजी, नहीं करत विचार॥
जो तेरी मनसा है योग की, मानो बचन हमार॥
महलों से भिक्षा ले आइयो, ब्याही से बोलो माय॥
पुत्र कहे भिक्षा डारदे, जोग अमर हो जाय॥
कलि में अमर हो जावो भरथरी जी॥
बचन सुनत राजा भरथरी, मन में करते विचार॥
अंग का जामा राजा फाड़ के, गल की गुदड़ी बनाय॥
शिर का चीरा राजा फाड़ के, शिर की सेली बनाय॥
कानों के मोती उतार के, ब्राह्मणको दिये डार॥
सोने के कुण्डल उतार के, दिये खवास के हाथ॥
हाथ खप्पर कांधे फावड़ी, मुखपर भसम रमाय॥
आग बरन योगी बन चले, गुरु को शीश नवाय॥
वनसे चले राजा भरथरीजी, आये नगरी माहिं॥
खिड़कीसे अलख जगावते, भिक्षा ल्यावो भोली माय॥
शब्द सुनत रानी श्याम दे, चम्पा बांदी बुलाय॥
थार भरे मोती लावती, सुरुख दुशाला धराय॥

भिक्षा दे आवो बांदी योगी को, नहीं धरम घटि जाय॥
भिक्षा देने बांदी आवती, मन में करती बिचार॥
मोतियन को थाल बांदी घर धरो, लावो चना भराय॥
भिक्षा ले जावो जोगी आसने, महलों शोर मचाय॥
बांदी के हाथ भिक्ष न लेता, सम्मुख देगी भोली माय॥
मैं रानी मैं ही पटरानी, मैं ही महलों की माय॥
सोना पहिरौं योगी औ रूपा, बांदी कैसे बनाय॥
गुस्सा भरी बांदी आपने, लाई बांस उठाय॥
योगी को मारने आई जी॥
बोले राजा ते दिन भरथरी, सुन बांदी मेरी बात॥
एक दिन बांदी वोह था, तुमको मोल खरीद॥
जोग लिये क्या मारती जी॥
तले ऊपर बांदी देखती, मन में करती विचार॥
पांय पदम माथे चन्द्रमा, सोहे अंग विभूति॥
देखि सूरत अपने राजा की, बांदी उलटी खाई पछाड़॥
रोती पीटती बांदी आवती, रानी से करती ज्वाब॥

जोगी के दरशन कीजिये, ठाढ़े राजकुमार॥
माई माई खड़े कहैं, सो है अंग विभूति॥
बोले रानी तेहि दिन श्याम दे, सुन बांदी मेरी बात॥
मारोंगी बांदी तुझे डांटूंगी, कोठे मैं दूंगी चुनाय॥
हटि क्यों न जाय बांदी बावली, राजा दोष लगाय॥
कुल में अमर राजा भरथरी जी॥
रोवै पीटै बांदी शिर धुनै, उलटी खाई पछाड़॥
देखै रानी बांदी रोवती, मन में करती विचार॥
नहाय धोय कपड़ा पहरती, करती सोलह शृङ्गार॥
थारभर मोती लावती, अंचल भरि हीरालाल॥
जरी के परदे छोड़ दिये, आई उठि के द्वार॥
भिक्षा ले जाओ रमते जोगिया, राजै देत अशीश॥
बोले राजा ते दिन भरथरी, सुन रानी मेरी बात॥
जेठ ससुर से परदा करो, जोगी से परदा नाहिं॥
मोती मूँगन को क्या करता, क्या करता हीरालाल॥
शब्द लगा जोगी हो चला, भिक्षा लावो भोली माय॥

पुत्र कह भिक्षा डारि दे, जोग अमर हो जाय
कुल में अमर राजा भरथरी जी॥
परदा उठाय रानी देखती, ठाढ़े राजकुमार॥
देख सूरत अपने राजा की, उलटी खाई पछाड़॥
थार पटकि रानी शिर धुने, मन में करती विचार॥
पटुका पकड़ समझावती, सुन ले राजकुमार॥
तेरा भला कैसे होयगा, कहता ब्याही से माय॥
सिड़ी भये कै तुम बावरे, कै तुम खाई है भांग॥
कौन समय की हम रानियां, कैसे कहते हो माय॥
ओछी बातैं राजा मत करो, तुम महाराजकुमार॥
समुझो क्यों न राजा भरथरी जी॥
बोले राजा ते दिन भरथरी, सुन रानी मेरी बात॥
राज धरम की रानियां, जोग फकीरी की माय॥
चेरिन की पट बांदियां, ओऊ लगैं मेरी माय॥
समझो क्यों ना रानी श्याम दे जी॥
उस दिन सइयां जोगी ना भये, जौ लौं थी बाबुलद्वार॥

काहे को गये बाबुलद्वार में, क्यों भला कीना ब्याह॥
कुवांरी रहती सइयां वर मिलता, ब्याहे लागि
गया दोष समझो न क्यों राजा भरथरी जी॥
ओछे ओछे रानी मत कहे, सुन ओछा की अरदास॥
बालक थे तब ब्याह लाये, कर धोखे में ब्याह॥
मेरा तेरा संयोग था, जोड़ा रचा करतार॥
हमारे कर्म में योग लिखा, राज लिखा तेरा नाहीं॥
पुत्र कर भिक्ष डार दे, जोग अमर हो जाय॥
कुल में अमर राजा भरथरी जी॥
बोली रानी ते दिन श्याम दे, सुन राजा महाराज॥
जो तेरी मनसा योग की, घरहिं योग तपि लेउ॥
गंगा मँगा दूँ हरिद्वार ते, बैठे तीरथ अन्हाउ॥
मढ़िया बनवा दूँ चम्पाबाग में, धूनी देऊँगी जलाय॥
सोने के आसन बनवाय कै, जड़वाऊँगी हीरा लाल॥
पाट पितम्बर की गूदडी, टोपी रतन जड़ाव॥
केसर सों धूनी डारती, खड़ी रहूँगी हजूर॥

दूध कटोरों से धुवावती, पंखे से करों तेरी ब्यार॥
दोनों बखत दरशन करूंगी, भोजन देउँगी बनाय॥
यहीं रहो मेरे सांइया जी॥
बोले राजा ते दिन भरथरीजी, सुन रानी मेरी बात॥
तेरे द्वारे त्रिया न रहौं, गुरु को आवेगी लाज॥
बहता पानी रमते योगिया, बिल में मेला हो जाय॥
बैठे राजा बैठे परजा, मृग बैठे उजारि॥
जोगीका बासा कुमारग, घर क्या पनघट क्या मशान॥
जिन घर छोड़े रानी आपने, उनकी ऐसी है रीति॥
पुत्र कह भिक्षा डारि दे, योग अमर हो जाय॥
कुल में राजा अमर भरथरी जी॥
जोगी होके सैयां रमि चले, मन की पूजी न आस॥
दूध न भीजा कापड़ा, बालक खेला न गोद॥
आशाका बिरवा सैयां ना लगा, जिसकी बिरमों मैं छांह॥
गोदी में बालक ना भया, जियरा राखों बिलमाय॥
जा बालक को मैं पालती, करती नगरी को राज॥

यहीं बिरमो मेरे सांइयां जी॥
बोलेराजा ते दिन भरथरी, सुन रानी मेरी बात॥
मूरख रानी तूं तो बावरी, माथे रे लिखा भगवान्॥
बेटी ओ बेटा नसीब का, मांगे सों मिलते नाहिं॥
बीज तो बोया बबूर का, आम कहां सेती खाय॥
रस की क्यारी तुमने विष बोया,लुनते क्यों पछताय॥
बैठीरहो रंगमहल में, चाबो नागर पान॥
पूजा करो दीनानाथ की, वेई लगावैं बेड़ा पार॥
हाथों का दिया तेरे संग चले, वही आवे तेरे काम॥
समझो क्यों ना रानी श्यामदे जी॥
योगी होयके सैयां जाउगे, क्या घर घर मांगोंगे भीख॥
जाय खड़े होगे काहू नीच के, गाली देंगी गँवार॥
क्षत्री धरम घट जायगा, तुम हो राजकुमार॥
समझो क्यों ना मेरे सांइयां जी॥
तुम्हें गाली से रानी क्या पडी, हमने साधा है योग॥
मन को मारैं तन वश करैं, साधैं सकल शरीर॥

दया फारि कफनी करें, तिनका नाम फकीर।।
तुम तो जावो रानी मायके, हमने साधा है योग।।
समझों क्यों ना रानी श्यामदे जी।।
बोली रानी ते दिन श्यामदे, सुनो राजा महाराज।।
माय बिना कैसा मायका, भाई बिना कैसी भैन।।
भैन बिना कैसी संमता, राजा बिना कैसा न्याय।।
पुत्र पिना कैसा पेखना, गोरस बिना कैसा भोग।।
चन्द बिना कैसी चांदनी, दीपक बिना कैसी ज्योति।।
बिना पुरुष कैसी कामिनी, कौन लगावै बेड़ापार।।
यहीं बिरमो मेरे सांइयाँ जी।।
राजा, गृह से नीकली संग, लाज गह्यो हमारी।।
मैड़ी पोढ़ौ आसन मारि, सेवा मैं करों तुम्हारी।।
रानी, सुख में सब कोई नारी,
नारी जो दुःख में होती, जिनके पिया भये फकीर।।
संग योगिनि हो फिरती।।
राजा मुख मति मांगो भीख, खप्पर भर आगे धरौंगी।।

घर घर मागूँगी भीख, सेवा मैं थारी करौंगी॥
रानी कौन किसी के संग, संग नहीं देह चलैगी॥
हमने लीना जोग, न माता फेर जनैगी॥
तजा राज और पाट, तजी सोलहसै रानी॥
तजा नगर गढ़द्वीप, सुनी गोरख की बानी॥
जोगी होके सैयां रमि चले, मेरा कौन हवाल॥
सावन आवैगा सैंया रँग मँगा, भादौ गहर गँभीर॥
इन्द्र उठे घन घोर के, बोले दादुर मोर॥
जब सुधि आवै म्हारे पीव की, नैनों से बरसेगा नीर॥
यहीं रमो मेरा सांइयाँ जी॥
बोले राजा ते दिन भरथरी, सुन रानी मेरी बात॥
सदा न फूलै रानी तोरई, सदा न सावन होय॥
सदा न जोबन थिर रहै, सदा न जीवे कोय॥
सदा किसीकी ना रही, पीतम गल की बांह॥
ढलती फिरती योंही जायगी, ज्यो तरवर की छांह॥
जैसा है मोती ओस का, ऐसा खलक जहान॥

देखन का तो झिलमिला, ढलते लगै न बार॥
क्या तो लंकपति ले गये, करन गये क्या खोय॥
हाथ पसारे योंही जायँगे, जिनके लाख करोर॥
पानीकासा बबूला, मति करना अरमान॥
पुत्र कह भिक्षा डारि दे, जोग अमर हो जाय॥
कुल में अमर हो जायगा, राजा भरथरी जी॥
बोले रानी ते दिन श्याम दे, सुन राजा महाराज॥
जोगी होके सैंयां रमि चले, मैं जोगिन तेरे साथ॥
तेरे चले त्रिया न बने, जोग पूरा ना होय॥
चलना परे दिन रैनि को, रहना बिकट उजार॥
जाय उतरैंगे काहू नगर में, धूनी देंगे जलाय॥
ओही नगर का राजा, आवे जोगी के पास॥
देखे सूरत रँगमँगी, मन में लावैगा पाप॥
तुमको बनावैं पटरानियां, हमको डारेगा मार॥
दुबिधा दोऊ गये, माया मिली न राम॥
मेरी तेरी संगति ना बने, सुन रानी मेरी बात॥

पुत्र कह भिक्षा डारि दे, जोग अमर हो जाय॥
कुल में अमर हो राजा भरथरी जी॥
पटका पकड़ समझावती, सुनो राजा महाराज॥
ज्ञान गुरु का बताय दो, नहिं मुद्रा लेऊँ छिनाय॥
कौन गुरु के तुम बालका, कौन दिया ऐसा ज्ञान॥
शब्द गुरु के हम बालका, गोरख दे गये ज्ञान॥
मरियो तेरे गुरु गोरखजी, जिन दिया ऐसा ज्ञान॥
गुरू को गाली त्रिया मत देवै, कर डारे भसमंत॥
गुरु गूँगा गुरु बावला, गुरु है देवन का देव॥
गुरु से चेला अति बड़ा, करता गुरुन की सेव॥
गुरु बसैंगे काशी में, चेला बसैंगे प्रयाग॥
अपने गुरु को यों झुकै, जैसे कुवा झुके पनिहार॥
बड़े बड़ाई रानी ना करैं, बड़े न बोलैं बोल॥
हीरा मुख सों ना कहे, लाख हमारा है मोल॥
पुत्र कह भिक्षा डार दे, जोग अमर हो जाय॥
कुल में अमर हो राजा भरथरी जी॥

बोली रानी ते दिन श्याम दे, सुनो राजा महाराज॥
जोगी होके सैंयां जाउगे, चौसर खेलो मेरे साथ॥
चौसर खेलि रानी क्या करैं, बाजी क्या बद लेऊँ॥
हारों तो तेरे संग चलौं, जीतौं जाने न देउँ॥
ऐसी बाजी रानी ना बदै, तक लिये दोनों दाव॥
जो बाजी जीतो तो तुम श्याम दे, दश दिन राखो बिलमाय॥
जो बाजी जीतैं भरथरी, तुम्हें लगावें न साथ॥
एक पासे की बाजी बदें, दूजा फेकैंगे नाहिं॥
चौसर लई है मँगाय कै, खेले राजकुमार॥
पासा लिये रानी हाथ में, सुन पासे अरदास॥
करम को सँग मेरा दीजियो, पड़ियो सोला और सात॥
सात के बखत सत्ता परो, नहीं पंजडिया चार॥
पासा फेंका रानी श्याम दे, पड़ि गये काने तीन॥
पासा पटकि रानी शिर धुने, उलटी खाई पछाड़॥
पासा मैं तुमको जलाय दों, जल के हो जाओ खाक॥
पासे को काहे जलावती, करम लगे तेरे आग॥

खोट कमाई है आपनी, जग को क्या देना दोष॥
दोहा- रामनाम सुमिरा नहीं, हरि सों किया न हेत॥
वे नर योंही जायँगे, ज्यों मूली का खेत॥
खेत बिगाड़ा है खरथुआ, समै बिगाड़ा है कूर॥
धरम बिगाड़ा है लालची, केशर की हो गइ धूर॥
समझै क्यों ना त्रिया बावली जी॥
पासा लिया राजा हाथ में, धरि भगवान् का ध्यान॥
याद किया गोरखनाथ को, राखो भेष की लाज॥
पासा फेंका राजा भरथरी, परि गये सोलह औ सात॥
जीती बाजी राजा उठि चले, रानी उलटी खाई पछाड़॥
पटुका पकरि समुझावती, सुनो राजा महाराज॥
महलों में भोजन तैयार है, कन्ता जेंलो जेवनार॥
छोटासा खप्पर निकालते, इसमें ल्यावो भोली माय॥
बोले रानी ते दिन श्याम दे, सुनो राजा महाराज॥
ओछे गुरू के तुम बालका, ओछा लाये भण्डार॥
सोलह सौ थार परोसती, खप्पर भरि गया नाहिं॥

कायल भई रानी श्याम दे, राजा देतो अशीष॥
पूरे गुरु के तुम बालका, पूरा लाये भंडार॥
पुत्र कह भिक्षा डार दी, लेजा रमते अतीत॥
लेके भिक्षा राजा रमि चले, आसन पड़ी है विभूत॥
धौरे मंदिर धौरे बाग में, बोलन लागे काले काग॥
धन्य घड़ी जा में जनम लिया, धन्य पुरुष तेरे भाग॥
मेरी मेरी कहके रमि गये, रानी खड़ी रोवैं द्वार॥
सांची बनी काया कोठरी, झूठा है जग संसार॥
नदी किनारे को रूखड़ा, जब तब होय विनाश॥
मेरी मेरी कहके रमि गये, अर्जुन जोधा से भीम॥
पड़ी रही झाड़ खंड में, गढ़ कोटा की सी नीम॥
जुग जुग जीवे मेरी नागरी, चौपड़ लगे है बजार॥
सुबस बसै मेरी नागरी, चौपड़ लगे है बजार॥
बारा से दूनी उजाड़ में, मिल गये गोरखनाथ॥
चेला बना ले बाबा आपना, सेवा करैंगे बनाय॥
धूनी तो तेरी हम करैं, संग फिरें तेरे नाथ॥

बोले बाबा गोरखनाथजी, सुन बच्चा मेरी बात।।
तुझको चेला ना करौं, तुम है राजकुमार।।
पान फूल के भोगिया, ना सधै तुमसे जोग।।
पान फूल बाबा सब तजे, सुन गुरु गोरखनाथ।।
छोड़ा ऊँचे का बैठना छोड़ा भाइयों का साथ।।
जोग बुरा जौहर भला, आठ प्रहर संग्राम।।
आठ प्रहर के बीच में, जिसे राखे भगवान्।।
चुटिया काट चेला किया, कान दीन्ही है फूक।।
पीठ ठोकि दीन्ही गोरखनाथजी, जोग अमर हो जाय।।
कुल में अमर हो जाओ भरथरीजी।।

इति श्रीकाशीनाथजी-विरचित भरथरीचरित्र संपूर्ण।

मुद्रक व प्रकाशक :

खेमराज श्रीकृष्णदास

९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

७ वीं खेतवाडी बैक रोड कार्नर,

मुंबई-४०० ००४.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स- ०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-६८७१०२५,
फैक्स -०२०-६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

